विचार बिन्दु

मैं ईश्वर से डरता हूँ और ईश्वर के बाद उससे डरता हूँ जो ईश्वर से नहीं डरता। –शेख सादी

स्वतंत्रता दिवस पर लोकतंत्र के भविष्य की चिंता

हम भारत के लोग कल देश का 78वां स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे। पिछले 77 सालों में देश ने प्रगति के अनेक सोपान चढ़े हैं। इन सोपानों पर हम सहज ही गर्व कर सकते हैं। तिजारत करने आए अंग्रेज, जो यहां के मालिक बन बैठे थे, जब वापस अपने वतन लौटे तब इस देश को कंगाल छोड़ कर गये थे। भारत ने अपने को फिर से बनाया। संविधान निर्माताओं ने न्याय और समता वाले समाज की रचना के वास्ते संसदीय लोकतंत्र वाले गणतांत्रिक राज्य की व्यवस्था दी। मगर तीन चौथाई सदी के बाद भी इस देश में लोकतन्त्र की वैसी इमारत खड़ी नहीं हो पाई है जिसमें न्याय, समानता और आपसी प्रेम का घर बसा हो। कैसी विडंबना है कि इतने लंबे समय तक, जब लोकतंत्र की जड़ें गहरी जम जानी चाहिए थी, उसके भविष्य की चिंता करनी पड़ रही है। अजीब बात यह है कि सबको अपने-अपने राजनैतिक विरोधियों से ही लोकतंत्र को खतरा नज़र आ रहा है। राज में आने की प्रतिस्पर्धा की राजनीति के लोग प्रेम और युद्ध में सब जायज के सिद्धांत पर चलते हुए नई डिजिटल तकनीकों के उपयोग से अपने-अपने कथाक्रम बना रहे हैं और आभासी दुनिया में प्रचार करके असली दुनिया में विभाजन रेखाएं खींच रहे हैं। लोकतान्त्रिक संस्थाओं को अयोग्य हाथों में सौंपना तथा लोकतंत्र की संविधानप्रदत्त शक्तियों को अपनी व्याख्या के अनुरूप काम में लेना अब सामान्य चलन बन गया है। लोक सेवा आयोगों के सदस्यों और विश्वविद्यालयों में कुलपतियों की नियुक्तियों तथा उनके कामकाज के हाल हम देख चुके हैं। लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था विधायिका में गंभीर चर्चाओं के स्थान पर हुड़दंग अधिक होता है। कार्यपालिका सामंती काल से चले आ रहे आकंठ भ्रष्टाचार की दलदल में और गहरे धंसी चली जा रही है। मुकदमों के भारी बोझ तले दबी न्यायपालिका तुरंत सुनवाई के लिए किस पर मेहरबान होगी कोई नहीं जानता। रियासतों के एकीकरण के बाद सामंती शासन से लोकतान्त्रिक व्यवस्था में पूर्ण बदलाव की मंज़िल अब भी दूर तक नज़र नहीं आती। वह इसलिये कि भारतीय समाज भौतिक रूप से भले ही आधुनिक हो गया हो, किन्तु वह शोषण, ऊंच-नीच और अधिनायकवाद के बोझ वाले सामंती सोच से मुक्त नहीं हो सका है। लोकतान्त्रिक राजनीति, जिसे सेवा का उद्यम होना थावह केवल राज करने का जरिया बन कर रह गई है। महात्मा गांधी ने राजनीति को पवित्र बनाने की कोशिश की थी। वे अपने सीने पर गोली खाने तक राजनीति में ही नहीं प्रत्येक मानव के जीवन में सत्य और अहिंसा की मर्यादा स्थापित करने में लगे रहे। उनके बाद किसी ने उस तरफ नहीं देखा। लोकतान्त्रिक व्यवस्था के केंद्र में मनुष्य होता है। सारी व्यवस्थाएं उसकी उन्नती और बहबूदी के लिए होती है। मगर आज़ादी का यह दिवस ऐसी लोकतान्त्रिक मर्यादाओं को तिरोहित होता देख रहा है।

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर याद आता है 25 नवंबर 1949 को संविधान सभा में दिया गया डॉ. भीमराव आंबेडकर का भाषण। उन्होंने कहा था: अगर हम लोकतंत्र को सिर्फ दिखावे में ही नहीं, बल्कि वास्तव में भी बनाए रखना चाहते हैं, तो हमें अपने सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संवैधानिक तरीकों को अपनाना चाहिए... इसका मतलब है कि हमें सविनय अवज्ञा, असहयोग और सत्याग्रह के तरीकों को छोड़ देना चाहिए... ये तरीके अराजकता के व्याकरण के अलावा और कुछ नहीं हैं और जितनी जल्दी इन्हें छोड़ दिया जाए, हमारे लिए उतना ही बेहतर है। उन्होंने दूसरी बात कही कि "अपनी स्वतंत्रता को किसी महान व्यक्ति के चरणों में न समर्पित करें, या उसे ऐसी शक्तियों को न सौंपें जो उसे उनकी संस्थाओं को नष्ट करने में सक्षम बनाती हैं..." यह सावधानी भारत के मामले में ... कहीं अधिक आवश्यक है क्योंकि यहां भक्ति या जिसे भक्ति का मार्ग या नायक-पूजा कहा जा सकता है, उसकी राजनीति में ... भूमिका कहीं अधिक है। धर्म में भक्ति आत्मा की मुक्ति का मार्ग हो सकती है, लेकिन राजनीति में भक्ति या नायक-पूजा निश्चित रूप से पतन और अंततः तानाशाही का मार्ग होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें केवल राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं होना है बल्कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना चाहिए। राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिक सकता जब तक उसके आधार में सामाजिक लोकतंत्र न हो। सामाजिक लोकतंत्र का अर्थ उन्होंने बताया कि एक ऐसी जीवन पद्धति जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को जीवन के सिद्धांतों के रूप में मान्यता दे। आजादी के इस दिवस पर हम पाते हैं कि महात्मा गांधी और आंबेडकर की विरासत लेकर चलने का दावा करने के बावजूद यह देश ऐसा नहीं कर सका है। संसदीय लोकतंत्र में सामूहिकता पहली शर्त होती है जिसमें अल्पमत को सम्मान देने की मर्यादा होती है। मगर अब निर्वाचित प्रतिनिधि चाहे वे किसी भी वैचारिक रंग के हों मैं के अहंकार में बात करते हैं, सामूहिक हम की भाषा में नहीं। कैसी अनोखी बात है कि आंबेडकर ने जो बात 1949 में संविधान सभा में कही उस पर लोकतंत्र के इन 80 वर्षों में केवल, एक छोटे काल खंड में उभरी, एक राजनैतिक पार्टी ने अमल करने की ईमानदार कोशिश की। वह थी स्वतंत्र पार्टी। सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के सामने एक गैर-वामपंथी विपक्ष खड़ा करने के लिए 1959 में इस पार्टी का गठन किया गया था। इसके दो प्रमुख नेताओं सी. राजगोपालाचारी, जो राजाजी के नाम से अधिक जाने जाते हैं, और मीनू मसानी ने इस पार्टी के जरिए पहली बार देश में कांग्रेस के व्यावहारिक विकल्प का रोडमैप बनाया। दोनों नेताओं के बीच जबरदस्त तालमेल था। दस में से नौ मौकों पर घटनाओं की उनकी व्याख्या एक समान हुई और उनकी बनाई नीतियों और रणनीतियों से उनकी पार्टी को जबरदस्त शुरुआती सफलता मिली। राजाजी अपनी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी और पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठकों में दोहराते रहते थे कि "हमें सत्ता के पीछे नहीं भागना चाहिए, सत्ता को हमारा पीछा करना चाहिए।" लोगों को शिक्षित करके सत्ता की तलाश करने को उन्होंने पार्टी का उद्देश्य बताया।ट्रेड यूनियनों को मोर्चों के रूप में चलाने की कोशिश नहीं करना और न ही छात्र संघों में हस्तक्षेप करना इस पार्टी की नीति थी। उसका मानना था कि क्योंकि ट्रेड यूनियनों को श्रमिकों के हितों की देखभाल के लिए बनाया गया है और राजनीतिक दलों द्वारा इनका शोषण नहीं किया जाना चाहिए। इसी प्रकार छात्रों को राजनीति में आने से पहले अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहिए। संसद और राज्य विधानसभाओं और परिषदों में पार्टी के निर्वाचित विधायकों को वॉक-आउट करने की अनुमति यह पार्टी नहीं देती थी। अपने 15 वर्षों के अस्तित्व के दौरान, पार्टी के सांसदों ने केवल एक बार लोकसभा में वाकआउट किया और वह भी तब जब संविधान के 17वें संशोधन पर बहस हुई थी जिसमें किसानों की जमीन के अधिग्रहण की व्यवस्था थी और पार्टी के प्रस्ताव पर अध्यक्ष द्वारा दिया गया निर्णय उन्हें स्पष्ट रूप से अनुचित लगा। एक बार तो ऐसा अवसर भी आया जब पार्टी के विधायक आंध्र विधानसभा से बहिर्गमन कर सदन के बाहर प्रदर्शन करने लगे तो पार्टी के केंद्रीय संसदीय बोर्ड ने ऐसा करने वाले विधायकों के समूह के नेता, जो राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य भी थे, को ताड़ना देते हुए ऐसा दोबारा ऐसा न करने की चेतावनी दी। उस संसदीय बोर्ड ने अपना यह निर्णय दर्ज किया: जब विधानसभा का सत्र चल रहा हो, तब स्वतंत्र पार्टी के सभी विधायकों को विधानसभा के अंदर होना चाहिए, न कि बाहर। उन्हें बाहर खड़े होकर विरोध करने के लिए नहीं चुना गया है। वे सदन में रहने के लिए चुने गए हैं और अगर चर्चा के तहत मुद्दे पर पार्टी की स्थिति विरोध की है तो उसे वहां दर्ज कराते हैं।

धर्म में भक्ति आत्मा की मुक्ति का मार्ग हो सकती है, लेकिन राजनीति में भक्ति या नायक-पूजा निश्चित रूप से पतन और अंततः तानाशाही का मार्ग होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें केवल राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं होना है बल्कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना चाहिए। राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिक सकता जब तक उसके आधार में सामाजिक लोकतंत्र न हो।

स्वतंत्र पार्टी विरोध के लिए विरोध करने में विश्वास नहीं रखती थी। उसका मानना था कि ऐसे मौके भी आ सकते हैं जब पार्टी को एक सरकारी प्रस्ताव का समर्थन करना पड़े, यदि यह राष्ट्रीय हित में हो और भले ही इसका मतलब विपक्ष में अन्य दलों के साथ रैंक तोड़ना हो। एक अवसर पर श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी ने रुपये के अवमूल्यन के लिए विपक्षी दलों का समर्थन मांगा। अर्थव्यवस्था बुरी तरह से संकट में थी और विदेशी व्यापार के अधिक होने से बड़े पैमाने पर मार पड़ रही थी। पार्टी ने कांग्रेस का समर्थन करने का फैसला किया, भले ही अन्य विपक्षी दलों ने अवमूल्यन का विरोध किया और उससे नाराज हुए, लेकिन पार्टी अपनी जमीन पर डटी रही। 1962 और 1971 के बीच कई मौकों पर ऐसा भी हुआ जब पार्टी ने अविश्वानस प्रस्ता्वों में भाग लेने से मना कर दिया। पार्टी ने यह स्पष्ट कर किया कि अविश्वास प्रस्ताव गंभीर संसदीय हथियार होता है जिसका कम से कम इस्तेमाल किया जाना चाहिए, उसे तुच्छ नहीं बनाया जाना चाहिए। पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र को स्वीकार करने और पार्टी की एकता के नाम पर अपने सदस्यों को बांधे नहीं रखने का सिद्धांत भी इस पार्टी ने दिया। उसकी नीति थी कि पार्टी व्हिप का उपयोग इतना दमनकारी नहीं हो कि पार्टी के विधायक केवल वोटिंग मशीन बन कर रह जाएं। मगर आजाद भारत की दलीय राजनीति भटकती चली गई और लोकतान्त्रिक मूल्यों को मजबूती देने के बजाय इनके नेता सामंती व्यवहार में रस लेते हुए उसे आज ऐसे मुकाम पर ली आए हैं जहां सभी को लोकतंत्र के भविष्य की चिंता होने लगी हैं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कार्बन उत्सर्जन : दुनिया खतरे में है

अविनाश जोशी

कार्बन व्यापार में चीन, अमेरिका, रूस, जर्मनी, दक्षिण कोरिया बड़े निर्यातक हैं। इन देशों में जिन कंपनियों का कार्बन उत्सर्जन देश के सालाना कार्बन उत्सर्जन का साठ फीसद से ज्यादा है, वे अपने उत्सर्जन की भरपाई 'कार्बन क्रेडिट' खरीद कर करना आसान मानती हैं। प्रति इकाई 'कार्बन क्रेडिट' के बाजार भाव में मांग के अनुसार उतार-चढ़ाव आता रहता है। मसलन, चीन में सरकार की कार्बन उत्सर्जन रोकने पर सख्ती की नीति के कारण उद्योग 'कार्बन क्रेडिट' खरीदने की होड़ में हैं। एक रिपोर्ट से पता चलता है कि साल 2021 में कुल कार्बन उत्सर्जन के आधे हिस्से में चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ के देश शामिल थे। इस मामले में भारत का योगदान महज सात फीसद है, जबकि चीन इकतीस फीसद कार्बन उत्सर्जन करता है जो अपने आप में सर्वाधिक है

विश्व के सभी देशों में औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार से ठीन हाउस गैसों का उत्सर्जन काफी तेज गति से बढ़ रहा है, जिसके कारण पृथ्वी के तापमान में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। तापमान में होनें वाली इस वृद्धि में सबसे अधिक योगदान कार्बन डाई ऑक्साइड गैस का है। जिन देशों में औद्योगिक गतिविधियाँ ज्यादा होतीं है, वहां कार्बन का उत्सर्जन अधिक होता है। क्योटो प्रोटोकोल एक ऐसी ही संधि है, जो कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए विश्व के विकसित और विकासशील देशों को बाध्य करती है।

अमेरिका जैसे देश अमेरिका प्रथम की नीति पर चलते हैं, जबकि भारत जैसे देश 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धांत को अपनाते हैं।यही कारण है कि सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन करने वाले अमेरिका जैसे देश औद्योगिकीकरण और विकास को सर्वोपरि लक्ष्य बनाए हुए हैं। जब कभी विकास की ओर नई प्रगति होती है तो उसका सीधा असर पर्यावरण पर पड़ता है और यही असर एक आदत का रूप ले ले, तो दुष्प्रभाव की पूरी संभावना बन जाती है। ऐसे दुष्प्रभाव से समय रहते निपटा न जाए तो पृथ्वी और उसके जीव अस्तित्व को लेकर एक नई चुनौती से गुजरने लगते हैं।

भारत में कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए कई नीतियाँ और उपायों की प्राथमिकता दी जा रही है भारत सरकार ने वायु प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए 'निगेलेशन स्ट्रेटेजी 2030' जैसी पहलों को प्रोत्साहित किया है, जो विद्युत, वायुमार्गों, हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग को बढ़ावा देते हैं। भारत ने नवाचारी और स्वच्छ ऊर्जा स्त्रोतों के प्रति विशेष ध्यान दिया है, जैसे कि सौर ऊर्जा और जल परियोजनाएँ, जो कार्बन नकरात्मक योगदान को बढ़ावा देती हैं। वनस्पति संरक्षण और वन्यजीव सुरक्षा के उपायों का पे भी ध्यान दिया जा रहा है, क्योंकि वनस्पतियों और वन्यजीवों का संरक्षण भी कार्बन संकेत को संभावित रूप से कम कर सकता है। भारत सरकार ने कार्बन कैचर और स्टोरेज (ण्ण्ए) प्रौद्योगिकियों के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाया है, जिससे कार्बन उत्सर्जन को अवरुद्ध किया जा सकता है। प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपायों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद कर सकते हैं।

कार्बन उत्सर्जन से यहा तात्पर्य कार्बन डाइऑक्साइड, मेथेन, और अन्य प्रकार के कार्बन का वायुमंडल में उत्सर्जन से है। ये उत्सर्जन मुख्य रूप से वाहनों की इंधन जलाने, उर्जा उत्पादन, और औद्योगिक गतिविधियों से होता है, जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारकों में से एक बनता है मानव द्वारा किये जा रहे उत्सर्जन के कारण औद्योगिक क्रांति से लेकर अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान पहले ही 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है और कार्बन उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि से हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी और अधिक खतरनाक जगह साबित होगी।

हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में छोटे-छोटे बदलाव करके कार्बन उत्सर्जन में कमी कर सकते है, जैसे सौर, पवन ऊर्जा के इस्तेमाल और पौधारोपण आदि से कार्बन उत्सर्जन में कमी की जा सकती है। कार्बन उत्सर्जन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का वातावरण में ईंधन, कच्चे तेल और कोयले के जलने से होता है। घर में बिजली के अधिक प्रयोग से और फ्लोरेसेंट बल्बों के इस्तेमाल से कर्मी की जा सकती है। ग्लास, धातुओं, प्लास्टिक और कागज को एक से अधिक बार उपयोग में ला कर भी हम कमी कर सकते हैं, इसके साथ ही निरंतर चलनें वाले रेफ्रिजरेटर की स्पीड धीमी रख कर या घर की दीवारों पर हल्के रंग का पेंट भी इसमें काफी मददगार होते है। वैसे तो इंडिकेटर और स्टैंडबाय मोड पर रहनें वाले गैजेट्स भी कई किलो कार्बन डाइऑक्साइड उत्पन्न करते हैं। कुछ छोटी छोटी बाते एवम आदते भी सहायक हो सकती है जैसे उचित मात्रा में कपड़े एकत्र होनें पर ही वाशिंग मशीन का उपयोग करे, गाड़ी के टायरों में हवा सही रखकर लगभग तीन प्रतिशत ईंधन की बचत कर सकते हैं, अधिक से अधिक वृक्ष लगानें का प्रयास करे, क्योंकि एक अकेला वृक्ष अपनी जिन्दगी में एक टन कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है,भोजन को बर्बाद करनें से बचे, क्योंकि इसे तैयार करने में काफी ऊर्जा का उपयोग होता है इस तरह हम प्रकृति एवम पर्यावरण के प्रति जागरूक समाज के निर्माण में सहायक हो सकते है।

दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान को लेकर लंबे समय से चिंता जताई जाती रही है। इस मसले पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन होते रहते हैं और उनमें वैश्विक स्तर पर तापमान में बढ़ोतरी के कारणों और उसके समाधान पर विचार किया जाता है। लेकिन जमीनी स्तर पर इस सबका हासिल क्या रहा है, यह छिपा नहीं है। हालत यह है कि तापमान में बढ़ोतरी की समस्या अब ऐसी शक्ल अख्तियार करती जा रही है,जिसमें ऐसा लगता है मानो बहुत कुछ हाथ से छूट रहा हो। पिछले कुछ समय से मौसम के अति कठोर होते जाने की वजहें तापमान के इसी उतार-चढ़ाव में छिपी हैं। अमेरिका के दक्षिण-पश्चिम और मेक्सिको में जानलेवा गर्म हवाएं चल रही हैं तो यह बेवजह नहीं हैं। अब अगर दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी बढ़ते तापमान की वजह से बिगड़ते हालात की खबरें आ रही हैं, तो यह एक तरह से गहराती समस्या की ही कड़ियां हैं। विडंबना यह है कि आए दिन होने वाली बैठकों में वैज्ञानिक और पर्यावरणविद जलवायु में आती विकृति के लिए कोयला, तेल और प्राकृतिक जीवाश्म ईंधन के उपयोग से जलवायु की निरंतरता में होने वाले बदलाव को जिम्मेदार ठहराते हैं। तात्कालिक स्तर पर इस मसले के हल के लिए कुछ बिंदुओं पर सहमति भी बनती है। लेकिन फिर कुछ समय बाद सब कुछ पहले की तरह चलने लगता है।

कोरोना महामारी के दौरान जब दुनिया के ज्यादातर देशों में पूर्णबंदी लगी थी, तब कार्बन उत्सर्जन में न केवल गिरावट आई थी, बल्कि आसमान कहीं अधिक साफ और प्रदूषण मुक्त देखने को मिला था। दरअसल कार्बन उत्सर्जन को लेकर दुनिया के देशों में कभी एकजुटता देखने को मिली ही नहीं। विकसित और विकासशील देशों में इसे लेकर आरोप-प्रत्यारोप भी व्यापक पैमाने पर रहे हैं। इतना ही नहीं, कार्बन उत्सर्जन को लेकर सभी देश बढ़-चढ़ कर अंकुश लगाने की बात करते रहे और हकीकत में नतीजे इसके विपरीत बने रहे। पृथ्वी साढ़े चार अरब साल पुरानी है और कई कालखंडों से गुजरते हुए मौजूदा पर्यावरण में है। यदि इससे वाकई बचना है तो वैश्विक उत्सर्जन में हर साल औसतन एक सौ चालीस करोड़ टन की कटौती करनी होगी तब कहीं जाकर 2070 तक कार्बन उत्सर्जन के मामले में शून्य तक पहुंचा जा सकेगा। कार्बन उत्सर्जन से उत्पन्न समस्या निजी नहीं है और दुनिया के देश भले ही आर्थिक संपन्नता और सभ्यता के चरम पर हों, मगर पृथ्वी को उसी की भांति बनाए रखने में यदि सफल नहीं होते हैं तो दुनिया को इसकी बड़ी कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना होगा।

भारत की अपनी चिंताएं हैं। एक तरफ जहां करोड़ों लोगों को भुखमरी और गरीबी से बाहर निकालना है जिसके लिए आर्थिक विकास अपरिहार्य है, तो दूसरी ओर ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन में भी कमी लाना है। ये दोनों दृष्टिकोण एक-दूसरे के अंतर्विरोधी हैं। यही कारण है कि भारत सौर और पवन ऊर्जा के विस्तार से अपनी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का रास्ता भी खोज रहा है। वास्तव में कार्बन उत्सर्जन में कटौती को लेकर सम्मेलनों में साहस दिखाने वाले देशों की कमी नहीं है, मगर देश के भीतर आर्थिक विकास की आपा-धापी के चलते वायदों पर भी खरे नहीं उतर पाते हैं।

–अविनाश जोशी,
स्वंतत्र पत्रकार एवं लेखक

जालोर के सरकारी स्कूल ने प्रतिभाओं के होर्डिंग्स और पोस्टर लगाने की पहल की

रेवत ग्राम के विद्यालय में विविध क्षेत्र की प्रतिभाओं का भी परिचय दिया है

जालोर, (कासं)। प्रदेश में नामी-गिरामी शिक्षण संस्थानों के बीच जहां हर वर्ष नए शैक्षणिक सत्र में एडमिशन के लिए लुभाने के लिए उच्च प्राप्तांकों वाली मार्कशीट को दर्शाते होर्डिंग-पोस्टर का वार दिखाई देता है, वहीं जालोर के एक सरकारी स्कूल ने बच्चों पर प्राप्तांकों के मानसिक तनाव को कम करने वाली अभिनव पहल की है जो अभिभावकों और शिक्षा क्षेत्र में बहुत सराही जा रही है।

असल में प्रतिभाएं आमतौर पर सिर्फ प्राप्तांकों (प्रतिशत) के आधार पर ही तय होती है, लेकिन जालोर जिले के रेवत ग्राम स्थित इस विद्यालय में प्राप्तांकों के अलावा विविध क्षेत्र की अपनी प्रतिभाओं का भी परिचय दिया है। नतीजे इस स्कूल के भी बहुत अच्छे हैं लेकिन साथ-साथ विद्यालय ने अपने प्रवेशोत्सव पोस्टर नृत्य प्रतिभाएं, खेल प्रतिभाएं,

■ विद्यालय की इस पहल को अभिभावकों और शिक्षकों सहित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविद्ों ने अनुकरणीय बताया है

सुंदर लेखन प्रतिभाएं, चित्रकला प्रतिभाएं, गायन कला प्रतिभा, सिलाई कला प्रतिभा, काव्य प्रतिभा और काफ्ट प्रतिभा के अलावा सोशल मीडिया प्रतिभा तक का परिचय दिया है। इस सरकारी विद्यालय ने श्रेष्ठ अंकों वाले विद्यार्थियों के साथ ही विभिन्न बहुआयामी प्रतिभाओं के होर्डिंग और पोस्टर लगाकर नई मार्केटिंग और ब्रांडिंग करने की पहल की है, जिसमें अंकों की मेरिट के साथ ही स्पोर्ट्स, डांस, सिंगिंग, पेंटिंग्स, बेस्ट राईटिंग, पॉइम्म, स्पीच आदि गतिविधियों को भी शामिल कर विविध टेलेंटेड प्रतिभाओं के होर्डिंग्स और पोस्टर लगवाकर सर्वांगीण विकास का मैसेज दिया है।

विद्यालय के प्राचार्य छगनपुरी गोस्वामी ने बताया कि व्याख्याता संदीप जोशी ने साथी शिक्षकों के साथ मिलकर रेवत स्कूल में यह नई पहल की है। शिक्षक जोशी के मुताबिक कोचिंग एवं ट्यूशन के दबाव, अंकों की जानलेवा प्रतिस्पर्धा, सफलता का प्रेशर और असफलता का डर आदि से बच्चे और अभिभावक भारी तनाव में जी रहे हैं। परीक्षा में अंक प्राप्त करने की होड के समानांतर एक लाइन बहुआयामी प्रतिभाओं की भी खड़ी करनी होगी। ज्यादा अच्छा है कि यह दूसरी लाइन और भी बड़ी हो। रेवत के सरकारी स्कूल ने इस दिशा में एक कदम बढ़ाया है, समस्या से समाधान की ओर।

इस बार प्रवेश उत्सव के दौरान 12वीं बोर्ड कक्षा में सर्वोच्च 95.20 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली विद्यार्थी के साथ-साथ विद्यालय की अन्य विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं के भी चित्र होर्डिंग्स, पोस्टर इत्यादि पर लगाए है। जिनमें खेल प्रतिभा, पेंटिंग प्रतिभा, नृत्य प्रतिभा, सुंदर हैंड राइटिंग वाले विद्यार्थी, अच्छा क्राफ्ट करने वाले विद्यार्थी, गायन प्रतिभा, सुंदर कविता पाठ करने वाले विद्यार्थी के भी नाम और फोटो प्रकाशित किए हैं। विद्यालय की इस पहल की अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा सराहना हुई ही, साथ ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविद्ों ने भी इस पहल को अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय बताया है। एनसीईआरटी के संयुक्त निदेशक प्रो. श्रीधर श्रीवास्तव ने विद्यालय को शुभकामनाएं देते हुए लिखा कि यह बहुत सुंदर विचार है। हर तरह की प्रतिभाओं को स्थान एवं सम्मान मिलना चाहिए। यह ह्श्वक्क 2०2० के प्रथम सिद्धांत का परिपालन है। विद्यालय को बधाई।

इसी प्रकार एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक प्रोफेसर जेएस राजपूत, विख्यात प्रबंध गुरु एन रघुरामन, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार से जुड़े गुजरात निवासी एवं वर्तमान में अमेरिका निवासी शिक्षाविद् चेलाराम जोशी सहित अनेक शिक्षाविद्ों, प्रशासनिक अधिकारियों ने इस पहल की सराहना की है। अमरीका में कार्यरत भारतीय मूल के वैज्ञानिक डॉ. तेज पारीक ने विद्यालय के इस नवाचार की प्रशंसा की है।

डिग्गी कल्याणजी का लक्खी मेला परवान पर, तीसरे दिन उमड़े श्रद्धालु

मालपुरा, (निसं)। तीर्थ स्थल डिग्गी में चल रहे डिग्गी कल्याण महाराज का 59वां लक्खी मेला तीसरे दिन मंगलवार को परवान पर रहा। भगवान विष्णु के स्वरूप कल्याणधणी की मनमोहक झांकी के दर्शन कर चरणों में शीश झुकाने के लिये कल्याण भक्त अनवरत डिग्गी की ओर बढ़ रहे हैं।

कल्याण भक्तों की सेवा-चाकरी की लोगों में होड़ सी मची हुई है। जयपुर रोड बजरी नांके के पास लगे श्रीजी भंडारा व डिग्गी मोड़ से आगे लगे श्याम मित्र मंडल के भंडारे में अपनी सेवाऐं दे रहे सेवक पदयात्रियों में कल्याणधणी का वास मानकर उनके चरण धोने व भंडारे में तैयार किये गये कई प्रकार के व्यंजन भक्तों को परोसकर स्वयं को श्रीजी के समीप होने का अहसास कर रहे हैं। डिग्गी तीर्थ की और आने वाले छोटे से बड़े हर

डिग्गी लक्खी मेले में श्रीजी के दर्शन के लिये आस्था का सैलाब उमड़ा।

एक मार्गों पर श्रीजी भक्तों की टोलियां कल्याणधणी के जयकारे लगाते हुये हाथों में केसरिया ध्वज लिये केसरिया कल्याण मान भूल मत जाज्यों सा, उंची पेड़ी कलां धणी की मोसू चढ चो न उतरयो जाऐ किजो मारा कलाधणी ने मारो हाथ पकड़ ले जाये, जैसे भजनो पर नाचते-गाते झूमते श्रीजी भक्त डिग्गी की और बढ़ रहे हैं। छोटी-छोटी पगडंडियों पर लगी भक्तों की लम्बी कतारें दूर से ही भक्तों को अपनी और आकर्षित कर रही है। कई शारीरिक कष्टों से छुटकारा पाने की मन में अरदास लिये श्रद्धालु हाथ में श्रीफल लेकर कनक दण्डवत करते श्रीजी के दरबार मे पहुंच रहे है। 11 अगस्त को जयपुर से रवाना हुई लक्खी

■ श्याम मित्र मंडल व श्रीजी भंडारा में कल्याण भक्तों की सेवा-चाकरी की होड़ लगी

पदयात्रा के साथ ही शुरू हुआ मेले के आज तीसरे दिन मंगलवार को डिग्गी पहुंचे कल्याण भक्तों का आंकड़ा एक लाख की संख्या को पार कर गया।

यात्रा मार्ग में जगह-जगह लगे भंडारों के अतिरिक्त पदयात्रियों की सेवा के लिये सेवादार दूर-दराज से पहुंच डिग्गी पहुंच भक्तों को केला, सेव, काजू, वनस्पति सहित नींबू, सिकंजी ईत्यादि परोस सेवा में जुटे हुये हैं। प्रदेशभर से डिग्गीधाम के लिये रवाना हुई पदयात्राऐं डिग्गी पहुंचने का क्रम लगातार बढ़ रहा है। श्रीजी भक्तों की सुरक्षा के लिये मंदिर ट्रस्ट की और से चौपड़ चौराहे से महिला व पुरूष की अलग-अलग रैलिंग लगाई गई है तो सात सौ से अधिक पुलिस के अधिकारी व जवान चप्पे-चप्पे पर तैनात है। टोंक व वैशाली डीपो की ओर से दर्शनों के पश्चात कल्याण भक्तों को गंतव्य स्थान पर पहुंचाने के लिये अतिरिक्त बसें लगाकर यात्रियों को किराये में 50 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। एसडीएम कपिल शर्मा, तहसीलदार राहुल पारीक, एएसपी रामकुमार कस्वा, डीएसपी महेन्द्र मीणा, विकास अधिकारी सतपाल कुमावत, डिग्गी थानाधिकारी कप्तान सिंह, मैला कन्ट्रोल रूम से मेला व्यवस्थाओं की निगरानी कर रहे हैं। चिकित्सा विभाग की टीमें तो एनसीसी व स्काउट कैडेट्स मेले में अपनी सेवायें दे रहे हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 14 अगस्त, 2024

सावन मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, अनुराधा नक्षत्र दिन 12:13 तक, ऐन्द्रयन योग सांय 4:05 तक, कौलव करण दिन 10:24 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 12:13 तक है। रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। आज श्री हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:17 तक, शुभ 10:54 से 12:31 तक, चर 3:46 से 5:24 तक, लाभ 5:24 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 7:01

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

कर्क
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है और उचित परामर्श मिल सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

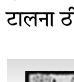

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

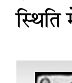

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी।

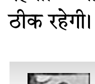

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

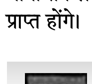

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।